BACKGROUNDERS
Press Information Bureau
Government of India

कारगिल विजय दिवस 2025

26 वर्षों के पराक्रम और विजय का सम्मान

25 जुलाई, 2025

परिचय

इस वर्ष पूरा देश 26वां कारगिल विजय दिवस मनाने के लिए एकजुट है। यह दिन भारत के इतिहास में गौरव की किरण की तरह चमकता है। यह 1999 की उस शानदार विजय का प्रतीक है जब हमारे सैनिकों ने बर्फ से ढकी चोटियों और दुश्मन की लगातार गोलाबारी का सामना करते हुए, बेजोड़ साहस और अटूट संकल्प के साथ कारगिल की चोटियों पर पुनः विजय हासिल की थी। 26 जुलाई को, लद्दाख की दुर्गम पहाड़ियों पर तिरंगा एक बार फिर शान से लहराया, जो बलिदान, वीरता और अटूट राष्ट्रीय भावना का प्रतीक है।

यह वर्षगांठ केवल कैलेंडर की एक तारीख नहीं है, बल्कि यह उस धैर्य और एकता की एक प्रेरक याद दिलाता है जो भारत को परिभाषित करता है। यह उन वीरों को सलाम है जिन्होंने दुर्लभ हवा और बर्फीली हवाओं में लड़ाई लड़ी और हर चोटियों को अपनी बहादुरी का प्रमाण बना दिया।

कारगिल युद्ध के रूप में जाना जाने वाला संघर्ष मई 1999 में शुरू हुआ जब घुसपैठियों ने चुपके से नियंत्रण रेखा पार कर ली और ऊंची चोटियों पर भारतीय चौकियों पर कब्जा कर लिया। उनका नापाक मकसद श्रीनगर को लेह से जोड़ने वाले महत्वपूर्ण राजमार्ग 1ए को काटना था। लेकिन उन्होंने एक राष्ट्र की इच्छाशक्ति को कम करके आंका। भारत ने ऑपरेशन विजय के साथ जवाब दिया, जो एक ऐसा मिशन था जिसमें सावधानीपूर्वक योजना, दृढ़ संकल्प और उसके सैनिकों की अदम्य भावना का मिश्रण था।

कारगिल विजय दिवस केवल स्मरण का अवसर नहीं है। यह मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने वालों की विरासत का सम्मान करने का संकल्प है। यह हमारी स्वतंत्रता की रक्षा करने वाले साहस और बलिदान की भावना को जीवित रखने का एक सतत आह्वान है। आज, जब हम 1999 के वीरों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, हम "एक शाश्वत सत्य: भारत की एकता और संप्रभुता सदैव अक्षुण्ण रहेगी", की पुष्टि करते हैं।

पृष्ठभूमि: कारगिल युद्ध और भारत की प्रतिक्रिया

1999 की गर्मियों में, जब पूरा भारत भीषण गर्मी से जूझ रहा था, बर्फीले हिमालय की ऊंचाइयों पर एक अलग ही युद्ध छिड़ा हुआ था। यह कोई विशाल रेगिस्तान या हरे-भरे मैदानों में लड़ा जाने वाला युद्ध नहीं था, बल्कि उन नुकीली चोटियों पर लड़ा जा रहा था जहां ऑक्सीजन की कमी थी, तापमान असहनीय था और जमीन का एक-एक इंच हिस्सा खून की कीमत पर हासिल किया जा रहा था। यह कारगिल युद्ध था, एक सैन्य अभियान से कहीं ज़्यादा, यह विश्वास, दृढ़ता और बलिदान की परीक्षा थी।

ऊंचाई वाले क्षेत्रों में असामान्य हलचल की हल्की-सी आहट जल्द ही एक खतरनाक खुलासे में बदल गई। बटालिक, द्रास और काकसर में हवा में घूमते हुए भारतीय गश्ती दल को भारतीय सीमा में गहराई तक जमे घुसपैठियों का पता चला। ये कोई मामूली विद्रोही नहीं थे। ये पाकिस्तानी सैनिक थे जो सर्दियों में बर्फीली चट्टानों पर चढ़ आए

थे, हथियारों और रसद के साथ खुदाई कर रहे थे और श्रीनगर को लेह से जोड़ने वाली महत्वपूर्ण जीवनरेखा को काटने के इरादे से वहां पहुंचे थे। यह विश्वासघात हाल ही में हुए लाहौर घोषणापत्र, शांति के एक ऐसे वादे से और भी स्पष्ट हो गया था जो अब तार-तार हो चुका था।

भारत की प्रतिक्रिया नपी-तुली लेकिन दृढ़ थी। प्रतिशोध की कोई जल्दी नहीं थी, बस अतिक्रमण की गई जमीन का एक-एक इंच वापस पाने का अटूट संकल्प था। इसके बाद जो ऑपरेशन हुआ, वह खुले मैदानों में तेजी से युद्धाभ्यास करने जैसा नहीं था। यह धरती की कुछ सबसे कठिन परिस्थितियों में, मीटर-दर-मीटर चोटियों को फिर से हासिल करने जैसा था। मुश्किल से बीस साल के युवा सैनिक, यह जानते हुए अपनी पीठ पर राइफलें बांधकर रात में खड़ी चट्टानों के पास चढ़ते गए कि हर कदम पर दुश्मन की गोलाबारी का सामना करना पड़ेगा। हर चढ़ाई प्रकृति और दुश्मन के खिलाफ एक चुनौती थी।

तोलोलिंग, टाइगर हिल और पॉइंट 4875 जैसे नाम युद्धघोष और राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक बन गए। तोलोलिंग में मेजर राजेश अधिकारी ने लगातार गोलाबारी के बीच अपने सैनिकों का नेतृत्व किया और गंभीर चोटों के बावजूद हार नहीं मानी। टाइगर हिल पर, सैनिकों ने रात के अंधेरे में लगभग असंभव ऊंचाइयों को फतह किया और एक साहसिक हमले में उस चोटी पर पुनः कब्जा कर लिया, जिससे युद्ध का रुख बदल गया। प्वाइंट 4875 पर, कैप्टन विक्रम बत्रा ने अपने निडर हमले और अपने प्राणों की आहुति देने से पहले कहे गए अमर शब्दों, "ये दिल मांगे मोर" के साथ इतिहास में अपना नाम दर्ज करा लिया। उनके साथ कैप्टन अनुज नैयर, ग्रेनेडियर योगेंद्र सिंह यादव, राइफलमैन संजय कुमार और अनगिनत अन्य वीर योद्धा थे जिनका साहस भारत की ढाल बन गया।

इन जवानों ने न सिर्फ गोलियों का सामना किया, बल्कि प्रकृति के प्रकोप, हड्डिया कंपा देने वाली हवाओं, शून्य से नीचे के तापमान और हर सांस पर सहनशक्ति की परीक्षा लेने वाले ऑक्सीजन के स्तर को भी झेला। फिर भी, उनके घर भेजे गए पत्रों में डर की नहीं, बल्कि कर्तव्य की छाप थी। कुछ ने घर के बने खाने की याद आने की बात लिखी, कुछ ने जल्द लौटने का वादा किया, और कुछ ने अपने बच्चों को मन लगाकर पढ़ाई करने की याद दिलाई। कई कभी वापस नहीं लौटे। उनकी कमी उन घरों में महसूस की गई जहां मांएं दीये जलाती थीं, जहां पत्नियां तस्वीरें पकड़े रहती थीं, और जहां बच्चे खेलते समय अपने पिता की वर्दी पहने रहते थे, जो इस बात से अनजान थे कि यह कितना बड़ा नुकसान है।

जुलाई के अंत तक, हफ्तों तक चली अथक लड़ाई के बाद, भारत ने नियंत्रण रेखा पार किए बिना ही सभी कब्जे वाली चौकियों पर कब्जा कर लिया था। भारी उकसावे के बावजूद, इस संयम ने अंतर्राष्ट्रीय क़ानून की रक्षा की और दुनिया भर में भारत का सम्मान बढ़ाया। इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ी, 545 सैनिक शहीद हुए, हजार से ज़्यादा घायल हुए, लेकिन देश का संकल्प और मज़बूत होता गया। द्रास स्थित कारगिल युद्ध स्मारक की दीवारों पर उकेरा गया हर नाम उस कीमत और उस गौरव की याद दिलाता है।

कारगिल एक सैन्य विजय से कहीं बढ़कर था। यह एक ऐसा क्षण था जिसने देशभक्ति को नई परिभाषा दी। इसने भारतीय सैनिक को गुमनामी से बाहर निकालकर हर नागरिक के दिल में जगह दिलाई। इसने हमें याद दिलाया कि आजादी की रक्षा वे लोग करते हैं जो सेवा के अवसर के अलावा कुछ नहीं चाहते। आज, कारगिल विजय दिवस पर द्रास में बजने वाला हर बिगुल, बंजर चोटियों पर लहराता हर झंडा, उस युद्ध की गूंज लिए हुए है, एक ऐसा युद्ध जिसने न सिर्फ़ जमीन वापस पाई, बल्कि साहस, सम्मान और एक आज़ाद राष्ट्र और उसके रक्षकों के बीच अटूट बंधन में विश्वास भी वापस पाया।

कारगिल के वीर: वीरता को नमन

कारगिल युद्ध साहस, बलिदान और अटूट संकल्प की कहानी थी। पुनः प्राप्त प्रत्येक पहाड़ का प्रत्येक शिखर असाधारण वीरता का परिणाम था। राष्ट्र ने इन योद्धाओं को अपने सर्वोच्च सैन्य पुरस्कारों से सम्मानित किया।

युद्ध के दौरान चार सैनिकों को भारत के सर्वोच्च वीरता पुरस्कार **परमवीर चक्र (पीवीसी)** से सम्मानित किया गया। नौ सैनिकों को **महावीर चक्र (एमवीसी)** से सम्मानित किया गया और 55 सैनिकों को **वीर चक्र (वीसी** से सम्मानित किया गया । एक सैनिक को **सर्वोत्तम युद्ध सेवा मेडल** (एसवाईएसएम), छह सैनिकों को **उत्तम युद्ध सेवा मेडल** (यूवाईएसएम), आठ सैनिकों को युद्ध सेवा मेडल (वाईएसएम), 83 सैनिकों को **सेना मेडल** (एसएम) और 24 सैनिकों को **वायु सेना मेडल** (वीएसएम) प्रदान किया गया। यह पुरस्कार युद्ध के दौरान प्रद र्शत सैनिकों की वीरता को दर्शाते हैं और प्रमाण देते हैं।

ग्रेनेडियर योगेंद्र सिंह यादव *- परमवीर चक्र, 18 ग्रेनेडियर्स*

ग्रेनेडियर योगेंद्र सिंह यादव 18वीं ग्रेनेडियर्स प्लाटून का हिस्सा थे, जिसे द्रास में टाइगर हिल पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था। 3 जुलाई 1999 को, भारी गोलाबारी के बीच, उन्होंने अपनी टीम के साथ एक बर्फीली चट्टान पर चढ़ना शुरू किया। उन्होंने दुश्मन के पहले बंकर को नष्ट कर दिया, जिससे उनकी प्लाटून आगे बढ़ सकी। कंधे और पेट में गोलियां लगने के बाद भी, उन्होंने आगे बढ़ना जारी रखा। उन्होंने एक और बंकर नष्ट कर दिया और तीन दुश्मन सैनिकों को मार गिराया। उनके साहस ने उनके साथियों को टाइगर हिल पर कब्जा करने के लिए प्रेरित किया। इस असाधारण बहादुरी के कार्य के लिए, उन्हें **परमवीर चक्र** से सम्मानित किया गया।

राइफलमैन संजय कुमार *- परमवीर चक्र, 13 जेएके राइफल्स*

13 जेएके राइफल्स के राइफलमैन संजय कुमार, 4 जुलाई 1999 को मुश्कोह घाटी में एक समतल चोटी पर कब्जा करने के लिए भेजे गए प्रमुख स्काउट्स में से एक थे। चोटी पर पहुंचने पर, उन्हें दुश्मन के एक बंकर से भारी गोलाबारी का सामना करना पड़ा। उन्होंने आमने-सामने की लड़ाई लड़ी और गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद तीन घुसपैठियों को मार गिराया। दुश्मन घबरा गया और एक मशीन गन छोड़ दी। संजय कुमार ने यह हथियार उठाया और भागते हुए सैनिकों पर तान दिया, जिससे कई और सैनिक मारे गए। उनके निडर कार्य ने उनके साथियों को लक्ष्य पर कब्जा करने के लिए प्रेरित किया। उन्हें उनकी वीरता के लिए **परमवीर चक्र** से सम्मानित किया गया।

कैप्टन विक्रम बत्रा *- परमवीर चक्र (मरणोपरांत), 13 जेएके राइफल्स*

13 जेएके राइफल्स के कैप्टन विक्रम बत्रा ने प्वाइंट 5140 पर कब्जा करने में अपने सैनिकों का नेतृत्व किया। एक साहसी हमले में, उन्होंने आमने-सामने की लड़ाई में चार दुश्मन सैनिकों को मार गिराया। जीत के बाद, उन्होंने मुख्यालय को अपनी सफलता की घोषणा रेडियो पर इन शब्दों के साथ की, **"ये दिल मांगे मोर"** - एक ऐसा मुहावरा जो कारगिल की भावना का प्रतीक बन गया।

7 जुलाई 1999 को, उनकी कंपनी को प्वाइंट 4875 पर कब्जा करने का काम सौंपा गया। भीषण युद्ध में, उन्होंने पांच दुश्मन सैनिकों को मार गिराया। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद, उन्होंने मिशन पूरा होने तक अपने सैनिकों का नेतृत्व जारी

रखा। विजय सुनिश्चित करने के बाद वे युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए। उनके प्रेरक नेतृत्व और सर्वोच्च बलिदान के लिए, उन्हें मरणोपरांत **परमवीर चक्र** से सम्मानित किया गया।

कैप्टन मनोज कुमार पांडे *- परमवीर चक्र (मरणोपरांत), 11 गोरखा राइफल्स*

11 गोरखा राइफल्स के कैप्टन मनोज कुमार पांडे को 3 जुलाई 1999 को बटालिक में खालूबार रिज को खाली कराने का आदेश दिया गया था। जैसे ही उनकी कंपनी आगे बढ़ी, उन्हें दुश्मन की भारी गोलाबारी का सामना करना पड़ा। उन्होंने दृढ़ संकल्प के साथ हमला किया, दुश्मन के दो बंकरों को नष्ट कर दिया और चार सैनिकों को मार गिराया। कंधे और पैरों में चोट लगने के बावजूद, उन्होंने आगे बढ़ते हुए और अधिक ठिकानों को ध्वस्त कर दिया। अपने जवानों को विजय की ओर ले जाते हुए उन्हें घातक चोटें भी लगीं। उनके असाधारण साहस और बलिदान के लिए, उन्हें मरणोपरांत **परमवीर चक्र** से सम्मानित किया गया।

कैप्टन अनुज नैयर *- महावीर चक्र (मरणोपरांत), 17 जाट*

कारगिल की चोटियों पर चढ़ने वाले युवा अधिकारियों में, कैप्टन अनुज नैयर शांत शक्ति के प्रतीक थे। 6 जुलाई 1999 को, तोलोलिंग परिसर में पिंपल II पर हमले के दौरान, उनकी कंपनी दुश्मन की विनाशकारी गोलाबारी की चपेट में आ गई। हताहतों की संख्या बढ़ गई, और हिचकिचाहट से जान जा सकती थी।

नैयर ने स्थिति का आकलन किया, फिर ऐसे दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़े कि संदेह की कोई गुंजाइश न रही। आगे बढ़कर नेतृत्व करते हुए, उन्होंने ग्रेनेड और निकट युद्ध कौशल का उपयोग करके दुश्मन के तीन बंकरों को व्यक्तिगत रूप से नष्ट कर दिया। जैसे ही मशीन गन की गोलियाँ उनके चारों ओर की चट्टानों को चीरती हुई आगे बढ़ीं, उन्होंने चौथे बंकर को नष्ट करने के लिए दबाव डाला। इस चुनौतीपूर्ण कार्य के अंत में में एक रॉकेट-चालित ग्रेनेड ने उन पर हमला किया, जिससे उनकी जान चली गई। उनकी बहादुरी ने दुश्मन की रक्षात्मक रेखा को तोड़ दिया, जिससे उनके सैनिक लक्ष्य पर कब्जा करने में सक्षम हुए। उनकी मां को बाद में याद आया कि वह कभी लड़ाई करने वाले नहीं थे, बल्कि हमेशा रक्षा करने वाले थे। कारगिल में उन्होंने इस सच्चाई को जीया और अपने जवानों को अपनी जान देकर बचाया।

मेजर राजेश अधिकारी *- महावीर चक्र (मरणोपरांत), 18 ग्रेनेडियर्स*

मेजर राजेश अधिकारी की कहानी अटूट प्रतिबद्धता की कहानी है। 1 जून 1999 को, तोलोलिंग पर हमले के दौरान, उनकी कंपनी को तोपखाने और छोटे हथियारों की भारी गोलाबारी का सामना करना पड़ा। प्रगति धीमी थी, और हताहतों की संख्या भारी थी।

उन्होंने एक साहसिक युद्धाभ्यास करते हुए खुले मैदान में आगे बढ़े और दुश्मन की गोलाबारी को अपने जवानों से दूर धकेल दिया। उन्होंने शांत सटीकता के साथ एक महत्वपूर्ण बंकर को निष्क्रिय कर दिया, इससे पहले कि दुश्मन की गोलाबारी ने उन्हें मार गिराया। उनके बलिदान ने उनके सैनिकों में जोश भर दिया, जिन्होंने कुछ ही समय बाद उस स्थान पर कब्जा कर लिया।

***लेफ्टिनेंट कीशिंग क्लिफोर्ड नोंग्रुम** - महावीर चक्र (मरणोपरांत), 12 जेएके एलआई*

मेघालय के लेफ्टिनेंट कीशिंग क्लिफोर्ड नोंग्रुम ने मात्र 24 वर्ष की आयु में यह सिद्ध कर दिया कि साहस न तो पद और न ही सेवा के वर्षों को महत्व देता है। बटालिक सेक्टर में प्वाइंट 4812 की लगभग खड़ी ढलानों पर, उन्होंने अपने सैनिकों का नेतृत्व दुश्मन के गढ़ों के विरुद्ध किया।

भारी गोलाबारी से घिरे क्लिफोर्ड बिना किसी हिचकिचाहट के आगे बढ़े। उन्होंने अचूक सटीकता के साथ ग्रेनेड फेंके, एक के बाद एक बंकरों को खामोश कर दिया। घायल होने पर भी, उन्होंने मिशन को पूरा करने के दृढ़ संकल्प के साथ, खाली होने से इनकार कर दिया। उनके पेट में लगी एक गोली ने उनकी जीवन लीला समाप्त कर दी, लेकिन इससे पहले उन्होंने अपने सैनिकों को चोटी पर धावा बोलने और विजय का दावा करने के लिए प्रेरित किया।

उनके पिता को बाद में क्लिफोर्ड के ये शब्द याद आए: "अगर मैं मर भी जाऊँगा, तो कम से कम एक सैनिक के रूप में।" आज, उनका नाम शिलांग और पूरे उत्तर पूर्व में एक किंवदंती है, एक पहाड़ी पुत्र जिसके रक्त ने कारगिल की बर्फ को पवित्र किया।

मेजर विवेक गुप्ता - महावीर चक्र (मरणोपरांत), 2 राजपूताना राइफल्स

कारगिल युद्ध में तोलोलिंग पर कब्जा एक निर्णायक क्षण था, और मेजर विवेक गुप्ता के नेतृत्व ने इसे संभव बनाया। 13 जून 1999 को, उनकी कंपनी ने अंधेरे की आड़ में हमला किया। योजना सटीक थी, चढ़ाई जोखिम भरी थी, और भोर होते-होते, उन पर गोलियों की बौछार हो गई।

पहले से ही घायल, विवेक आगे बढ़े और दुश्मन के एक महत्वपूर्ण ठिकाने को ध्वस्त कर दिया जिसने आगे बढ़ने में बाधा डाली थी। गोलियों की एक और बौछार ने उन्हें घातक रूप से घायल कर दिया, लेकिन इससे पहले कि वह एक दरार बनाते, जिसका इस्तेमाल उनके सैनिकों ने तोड़कर चोटी पर कब्ज़ा करने के लिए किया।

कैप्टन विजयंत थापर - *वीर चक्र (मरणोपरांत), 2 राजपूताना राइफल्स*

मात्र 22 वर्ष की आयु में, कैप्टन विजयंत थापर साहस और करुणा के प्रतीक थे। 2 राजपूताना राइफल्स में कमीशन प्राप्त करने के बाद, उन्हें ऑपरेशन विजय के केंद्र में धकेल दिया गया। जून 1999 में, उनकी बटालियन ने द्रास सेक्टर के नोल नामक एक भारी किलेबंद चोटी पर हमला किया। आगे से नेतृत्व करते हुए, विजयंत ने दुश्मन की लगातार गोलाबारी के बीच अपने जवानों का हौसला बढ़ाया और करीबी मुकाबले में कई बंकरों को नष्ट कर दिया। घायल होने के बाद भी, वह आगे बढ़े, लेकिन लक्ष्य से कुछ ही मीटर की दूरी पर एक स्नाइपर की गोली उन्हें लग गई। उनके कार्यों ने एक निर्णायक जीत का मार्ग प्रशस्त किया।

उनकी कहानी को सबसे अलग बनाता है वह पत्र जो उन्होंने अपने परिवार के लिए छोड़ा था, जो उन्होंने अपने भाग्य को शांतिपूर्वक स्वीकार करते हुए लिखा था। उन्होंने लिखा, "जब तक आपको यह पत्र मिलेगा, मैं आपको आसमान से देख रहा होऊंगा। मुझे कोई पछतावा नहीं है," और उनसे पूरी तरह से और गर्व से जीने का आग्रह किया। उनके

शब्द, उनके बलिदान की तरह, पीढ़ियों को प्रेरित करते रहेंगे और हमें याद दिलाते रहेंगे कि सच्ची वीरता केवल युद्ध में नहीं बल्कि उस विनम्रता से मापी जाती है जिसके साथ कोई व्यक्ति अपने कर्तव्य और भाग्य को स्वीकार करता है।

26वें कारगिल विजय दिवस से पहले विशेष पहल

जैसे-जैसे राष्ट्र कारगिल विजय दिवस की 26वीं वर्षगांठ मनाने की तैयारी कर रहा है, भारतीय सेना ने कई पहल की हैं जो केवल औपचारिक समारोहों तक ही सीमित नहीं हैं। ये आयोजन शहीदों को श्रद्धांजलि देने, उनकी वीरता की यादों को ताज़ा करने और सशस्त्र बलों व जनता के बीच के बंधन को मजबूत करने के लिए आयोजित किए गए हैं। प्रत्येक प्रयास स्मरण, सम्मान और संकल्प को दर्शाता है।

तोलोलिंग में श्रद्धांजलि: स्मृतियों का सफ़र

11 जून 2025 को, भारतीय सेना के फॉरएवर इन ऑपरेशंस डिवीजन ने कारगिल युद्ध के सबसे प्रतिष्ठित युद्धक्षेत्रों में से एक, तोलोलिंग चोटी पर एक स्मारक अभियान का आयोजन किया। यह अभियान द्रास स्थित कारगिल युद्ध स्मारक से शुरू हुआ और तोलोलिंग की लड़ाई के दौरान इस रणनीतिक ऊंचाई पर फिर से कब्ज़ा करने वाले सैनिकों को सम्मानित करने के लिए इतिहास के पन्नों को फिर से छू गया।

युद्ध में भाग लेने वाली इकाइयों से चुने गए 30 सैनिकों की एक टीम ने ऊबड़-खाबड़ ढलानों पर चढ़ाई की और शिखर पर तिरंगा फहराया। उनकी उपस्थिति उन लोगों के लिए एक जीवंत श्रद्धांजलि थी जिन्होंने सर्वोच्च बलिदान दिया। भारतीय वायु सेना भी इस प्रयास में शामिल हुई, जिसके अधिकारियों और वायुसैनिकों ने चढ़ाई में भाग लिया। यह सहयोग उस संयुक्त कौशल की भावना को दर्शाता है जिसने ऑपरेशन विजय को परिभाषित किया और जो आज भी भारत की रक्षा रणनीति की आधारशिला है।

यह अभियान महज एक साहसिक अभियान नहीं है, यह स्मरण, चिंतन और श्रद्धा की यात्रा है, जिसका उद्देश्य देश के इतिहास को आकार देने वाली साहस और बलिदान की कहानियों से भावी पीढ़ियों को प्रेरित करना है।

पर्वतीय भू-भाग साइकिल अभियान: शक्ति और पहुंच

फॉरएवर इन ऑपरेशंस डिवीजन द्वारा संचालित भारतीय सेना का पर्वतीय भू-भाग साइकिल अभियान 25 जून 2025 को सियाचिन बेस कैंप से शुरू हुआ और 12 जुलाई 2025 को द्रास स्थित कारगिल युद्ध स्मारक पर समाप्त हुआ। 680 किलोमीटर के कठिन मार्ग को तय करते हुए, टीम ने दुनिया के कुछ सबसे कठिन पर्वतीय दर्रों को पार किया, जिनमें खारदुंग ला, फोटू ला और हंबुटिंग ला शामिल हैं।

20 सैनिकों वाले इस अभियान ने विशुद्ध शारीरिक सहनशक्ति और मानसिक शक्ति का प्रदर्शन किया। इसका एक गहरा उद्देश्य भी था - स्थानीय समुदायों और युवाओं से जुड़ना। इस दौरान, टीम ने 11 सरकारी स्कूलों और लद्दाख विश्वविद्यालय के 1,100 छात्रों से बातचीत की, कारगिल युद्ध की कहानियाँ सुनाईं और हमारे सैनिकों द्वारा हमारे राष्ट्र की संप्रभुता की रक्षा करते हुए दिए गए अपार बलिदानों पर प्रकाश डाला।

सैनिकों ने लेह और सिल्मो स्थित पहली और दूसरी लद्दाख एनसीसी बटालियन के एनसीसी कैडेटों से भी बातचीत की और ज़िम्मेदार नागरिक बनाने में राष्ट्रीय कैडेट कोर की अहम भूमिका को रेखांकित किया। इन सत्रों ने युवाओं को अनुशासन और सेवा के मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित किया। रास्ते में नागरिकों और सेना की इकाइयों से मिले अपार समर्थन ने, जिन्होंने साइकिल सवारों का जयकारे और जलपान के साथ स्वागत किया, सशस्त्र बलों के प्रति अटूट विश्वास और सम्मान को दर्शाया।

गन हिल अभियान: तोपखाने का सम्मान

7 जुलाई 2025 को, भारतीय सेना ने गन हिल (प्वाइंट 5140) पर एक ऐतिहासिक अभियान चलाया, जो कारगिल युद्ध के दौरान पुनः हासिल की गई एक रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण चोटी थी। द्रास सेक्टर में स्थित, गन हिल एक रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण चोटी है जिसे 1999 के कारगिल युद्ध के दौरान पुनः प्राप्त किया गया था, जिसने

संघर्ष में एक महत्वपूर्ण मोड़ का संकेत दिया। इस पर कब्जा भारतीय सेना की परिचालन कुशलता और दृढ़ संकल्प का प्रतीक था।

इस अभियान में 87 सैनिकों ने भाग लिया, जिनमें 10 तोपखाना इकाइयों के 20 तोपची शामिल थे जिन्होंने मूल युद्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। कारगिल युद्ध में तोपखाना रेजिमेंटों के योगदान के सम्मान में 2023 में इस चोटी का आधिकारिक नाम "गन हिल" रखा गया।

श्रद्धांजलि को और भी व्यापक बनाने के लिए, उस क्षेत्र में लड़ चुके पूर्व सैनिक दल के साथ-साथ चले। कर्नल (तत्कालीन कैप्टन) राजेश अधाऊ और सूबेदार (तत्कालीन लांस नायक) केवल सिंह, सेना मेडल, ने युद्ध के प्रत्यक्ष अनुभव साझा किए, जिससे प्रतिभागियों में गर्व की भावना जागृत हुई। इस अभियान ने इस संदेश को और पुष्ट किया कि कारगिल के वीरों की स्मृति को सदैव संजोकर रखा जाएगा और उनका सम्मान किया जाएगा।

विशेष संपर्क अभियान: वीरों के परिवारों से पुनः जुड़ना

अपनी तरह की पहली पहल के तहत, भारतीय सेना ने कारगिल युद्ध के 545 शहीदों के परिवारों को सम्मानित करने के लिए एक राष्ट्रव्यापी संपर्क अभियान शुरू किया। इनमें सेना के 537, भारतीय वायु सेना के पांच, सीमा सुरक्षा बल का एक और दो नागरिक शामिल हैं।

यह अभियान 1 जून 2025 को शुरू हुआ, जिसमें 37 संपर्क दल कारगिल से 25 राज्यों, दो केंद्र शासित प्रदेशों और यहाँ तक कि नेपाल के संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य में युद्ध वीरों के घरों का दौरा करने के लिए रवाना हुए। हर मुलाक़ात में गहरी कृतज्ञता का भाव था, क्योंकि टीमें स्मृति चिन्ह, प्रशंसा पत्र और सरकारी लाभों का विवरण प्रस्तुत करती थीं। उन्होंने परिवारों की किसी भी चिंता का समाधान करने का भी प्रयास किया।

औपचारिकताओं से परे, यह आउटरीच बेहद भावुक था। परिवारों ने 26 साल बाद भी याद किए जाने पर हार्दिक आभार व्यक्त किया। कई लोगों ने बताया कि कैसे इस पहल ने उनके प्रियजनों की यादें ताज़ा कर दीं और उनके बलिदानों पर उनके गर्व को और मजबूत किया। टीमों ने कारगिल युद्ध स्मारक पर प्रदर्शन के लिए यादगार चीजें भी एकत्र कीं, ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए शहीदों की विरासत को संजोया जा सके।

यह कार्यक्रम 26 जुलाई 2025 को द्रास में राष्ट्रीय स्मरणोत्सव में समाप्त होगा, जिसमें गणमान्य व्यक्ति, सेवारत सैनिक, पूर्व सैनिक और वीरों के परिवार शामिल होंगे। यह पहल सशस्त्र बलों और उनके द्वारा सेवा प्रदान किए जाने वाले लोगों के बीच अटूट बंधन को एक जीवंत श्रद्धांजलि है।

कारगिल की भावना को आगे बढ़ाना

कारगिल में विजय केवल एक सैन्य उपलब्धि नहीं थी। यह दुनिया के लिए एक संदेश था कि भारत हर परिस्थिति में अपनी संप्रभुता की रक्षा करेगा। यह भावना आज भी देश की सुरक्षा नीति का मार्गदर्शन करती है। भारत लंबे समय से संयम की स्थिति से आगे बढ़कर आतंकवाद को प्रायोजित या समर्थन करने वालों के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई की स्पष्ट रणनीति की ओर अग्रसर हुआ है।

यह संकल्प 7 मई 2025 को पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में शुरू किए गए ऑपरेशन सिंदूर में स्पष्ट दिखाई दिया, जिसमें 26 निर्दोष लोगों की जान चली गई थी। इस मिशन ने सटीकता, व्यावसायिकता और उद्देश्य से चिह्नित तीनों सेनाओं की एक संतुलित प्रतिक्रिया का प्रदर्शन किया। सटीक खुफिया जानकारी के आधार पर कार्रवाई करते हुए, सशस्त्र बलों ने पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू-कश्मीर में नौ आतंकवादी शिविरों को निशाना बनाया। अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं को पार किए बिना प्रमुख खतरों को बेअसर करने के लिए उन्नत ड्रोन, मंडराते हथियार और स्तरित वायु रक्षा प्रणालियों को तैनात किया गया था।

इन हमलों ने जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा के प्रमुख कमांड सेंटरों को नष्ट कर दिया और 100 से ज्यादा आतंकवादियों को मार गिराया, जिनमें आईसी-814 अपहरण और पुलवामा हमले से जुड़े आतंकवादी भी शामिल थे।

जब पाकिस्तान ने 7 और 8 मई को ड्रोन और मिसाइल हमलों से जवाबी कार्रवाई करने की कोशिश की, तो भारत के एकीकृत वायु रक्षा नेटवर्क ने हर खतरे को नाकाम कर दिया। इसने भारत की आधुनिक नेट-केंद्रित युद्ध प्रणालियों और उन्नत ड्रोन-रोधी क्षमताओं की ताकत का प्रदर्शन किया।

निष्कर्ष

कारगिल विजय दिवस एक स्मरणोत्सव से कहीं बढ़कर है; यह उस अदम्य साहस और सर्वोच्च बलिदान का एक पवित्र स्मरण है जिसने 1999 में राष्ट्र को विजय दिलाई। यह उन वीरों को नमन करता है जिन्होंने लद्दाख की बर्फीली ऊँचाइयों पर असंभव बाधाओं के खिलाफ लड़ाई लड़ी, जिन्होंने अपना आज बलिदान कर दिया ताकि भारत गौरवान्वित और स्वतंत्र रह सके। उनके साहस और गौरव की कहानियां राष्ट्र के हृदय में हमेशा के लिए अंकित हैं, जो पीढ़ियों को सपने देखने, साहस करने और सेवा करने के लिए प्रेरित करती हैं।

कारगिल की सीख ने सुरक्षा के प्रति भारत के दृष्टिकोण को बदल दिया और एक मजबूत, अधिक चुस्त और आत्मनिर्भर रक्षा रुख को आकार दिया। संरचनात्मक सुधारों और चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ के पद के सृजन से लेकर स्वदेशी रक्षा निर्माण और अत्याधुनिक सैन्य तकनीक के उदय तक, राष्ट्र उद्देश्यपूर्ण ढंग से आगे बढ़ा है। आज, भारत आत्मविश्वास से भरा और युद्ध के लिए तैयार है, उसकी सेनाएं आधुनिक क्षमताओं से सुसज्जित हैं और अपनी जमीन के एक-एक इंच की रक्षा के अटूट संकल्प से प्रेरित हैं।

कारगिल की भावना सीमा पार आतंकवाद के प्रति भारत की स्पष्ट और दृढ़ प्रतिक्रिया में भी प्रतिध्वनित होती है। सर्जिकल स्ट्राइक, बालाकोट हवाई अभियान और हाल ही में हुए ऑपरेशन सिंदूर ने एक स्पष्ट संदेश दिया है: भारत शांति चाहता है, लेकिन उकसावे पर निर्णायक कार्रवाई करने से कभी नहीं हिचकिचाएगा।

जैसा कि राष्ट्र 26वां कारगिल विजय दिवस मना रहा है, वह वीरों की स्मृति का सम्मान करने, अपनी सुरक्षा को मजबूत करने और गणतंत्र की एकता और सुरक्षा को बनाए रखने के अपने संकल्प को दोहराता है। उनका बलिदान आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाश बना रहेगा।

संदर्भ:

PIB Archives

- https://archive.pib.gov.in/archive/ArchiveSecondPhase/FEATURE/1999-FEATURES/PDF/FEA-1999-07-20_145.pdf

New India Samachar

- https://newindiasamachar.pib.gov.in/WriteReadData/story/2022/Jul/S202207167790.pdf

PIB Backgrounders

- https://www.pib.gov.in/PressNoteDetails.aspx?NoteId=154617&ModuleId=3
- https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2129453

Ministry of Defence:

- https://bharatrannbhoomidarshan.gov.in/shaurya_gatha/details/2/kargil-war

एमजी/एके/केसी/एमपी/डीए